463 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | अष्टम् अंक | मार्च 2017

इस अंक में...

11 बुद्धिमान ही नहीं, प्रबुद्ध भी बनो
13 राष्ट्रीय घटनाक्रम
22 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
30 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
39 नवीनतम सामान्य ज्ञान
48 रोजगार समाचार
49 खेलकूद
57 स्मरणीय तथ्य
60 युवा प्रतिभाएं
65 आई.ए.एस. सक्सेस प्लानर-सिविल सेवा परीक्षा–2017 के बारे में गम्भीर होने का समय आ गया है
67 विश्व परिदृश्य
72 फोकस–मानव अर्थव्यवस्था : समतामूलक समाज का एक बेहतर विकल्प
75 विधि-निर्णय
76 लोक प्रशासन लेख–सूचना का अधिकार तथा सुशासन : भारतीय परिदृश्य
80 भौगोलिक लेख–सागरीय बायोम
82 मानवाधिकार लेख–संयुक्त राष्ट्र संघ एवं मानवाधिकार से सम्बन्धित प्रमुख (अन्तर्राष्ट्रीय) प्रसंविदाएं
86 महिला सशक्तिकरण लेख–'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना : एक सशक्त पहल
89 सामयिक लेख–बाढ़ से तबाह चीन
90 पर्यावरणीय लेख–राष्ट्रीय पर्यावरण नीतियाँ
91 पारिस्थितिकी लेख–पार्थिव पारिस्थितिक तंत्र
95 सार संग्रह
99 सामान्य अध्ययन–मध्य प्रदेश पी.एस.सी. मुख्य परीक्षा, 2015
108 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान–(i) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया अधिकारी ग्रेड 'बी' (प्रा.) परीक्षा, 2016
113 (ii) संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक भविष्य निधि आयुक्त परीक्षा, 2016
124 सामान्य ज्ञान अद्यतन
127 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
129 ऐच्छिक विषय–(i) भूगोल–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
136 (ii) शारीरिक शिक्षा–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
142 वार्षिक रिपोर्ट 2015-16–भारतीय डाक क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र के बढ़ते चरण–सिंहावलोकन
145 सामान्य बुद्धि परीक्षण–उत्तराखण्ड फॉरेस्ट ऑफीसर्स परीक्षा, 2015
150 संख्यात्मक अभियोग्यता–नाबार्ड असिस्टेंट मैनेजर परीक्षा, 2016
155 क्या आप जानते हैं ?
156 अपना ज्ञान बढ़ाइए
157 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा–राज्य के खर्चे पर चुनाव करवाने से काले धन पर रोक लग सकती है
159 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध–आर्थिक उदारवाद और सामाजिक विषमता
162 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक–452 का परिणाम

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

बुद्धिमान ही नहीं, प्रबुद्ध भी बनो

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

I once read that people who study others are wise, but those who study themselves are enlightened.....!

—Robin Sharma

अनेक लोगों की पूरी जिन्दगी स्वयं को जानें—समझे बिना निकल जाती है. वे बचपन में स्कूली पढ़ाई अक्षर ज्ञान में व्यस्त रहते हैं, जवानी में प्राप्त शिक्षा में आजीविका जुटाने में एवं वृद्धावस्था आते-आते भी घर-परिवार संघ-समाज को जानने व जीने में ही अपना सम्पूर्ण समय लगाया करते हैं. कुछ लोग धार्मिक क्लबों के सदस्य भी बन तो जाते हैं, किन्तु वे धर्म भी एक फैशन की तरह अथवा नियम-संस्कार की तरह ही अपनाया या छोड़ा करते हैं. कई लोग पुराणों व कथा-कहानियों में डूबे रहते हैं, एक आदर्श चरित्र की नकल करने में तत्पर दिखलाई पड़ते हैं, तो कई लोग अनेक दार्शनिक विचारधाराओं में उलझे रहते हैं. शब्द विलास में पाण्डित्य प्रदर्शन में खूब रस लेते हैं, तो कई लोग कर्मकाण्डों में लवलीन पाए जाते हैं.

कितने कम लोग ऐसे होते हैं, जो अपनी बुद्धिमानी का उपयोग प्रबुद्ध होने के लिए करते हैं, जो स्वयं को प्रबुद्ध नहीं बनाते वे अक्सर स्वयं को किसी-न-किसी विषय में व्यस्त रखते हैं और उसका बहाना बनाकर खुद से मुँह छिपाते हैं, खुद से ही पलायन करते रहते हैं.

खुद से बचने की भी बड़ी तरकीबें हैं, जो हममें से हर एक को आती है. अधिकांश को तो घर-परिवार में, प्रकट माहौल में, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में मौजूदा हालातों में इतनी दिलचस्पी होती है कि वे दिन-रात उसी की चर्चा करते रहते हैं. समाज सुधारक बनने की दीवानगी भी अनेक लोगों में इस कदर देखी जाती है कि वे अपना चेहरा धोए बिना औरों को कालिख पोतने की चाहत में परेशान बने रहते हैं.

एक पुरानी कहानी है किसी राजकुमार की, जो बेहद आराम तलबी, शौकपरस्त, नाखुद्दार इनसान था. किसी समय बिना घोड़े के उसे पैदल चलने की नौबत कुछ मंजर के लिए आ गई थी और तभी पहली बार उसके पैर के तलवे में एक फाँस चुभ गई. वह फाँस भी ऐसी चुभी कि भीतर तक धँस गई, दर्द के मारे कराहते हुए वह राजकुमार अपने पिताश्री के पास जाकर बहुत रोया, बहुत चिल्लाया. उसने पिता को कहा कि राज्य भर के सम्पूर्ण रास्तों की, चौराहों की, गलियों की स्वच्छता का अभियान जारी करे. अपने लाडले पुत्र की हर बात की सुनवाई करने वाले राजा पिता ने अगले ही दिन स्वच्छता अभियान जारी करवा दिया. अब क्या था ? जिधर देखो उधर झाड़ू ही झाड़ू लग रहे थे. चारों ओर धूल उड़ रही थी. अब वह धूल छत पर से सम्पूर्ण राज्य की सफाई अभियान का निरीक्षण कर रहे उस किशोर राजकुमार की आँखों में भी छाई. उसकी आँखें लाल हो गईं व आँसू गिराने लगी. अब पैर के दर्द के बाद अपनी आँख के दर्द से, जलन से, धूल मिट्टी की ओर घृणा भरी निगाहों से राजकुमार चिल्लाया कि ये क्या हो रहा है ? ऐसे वातावरण में तो दम घुटा जा रहा है. राजा पिता ने तुरन्त नया आदेश जारी किया कि जिन स्थानों से बहुत ज्यादा धूल उड़ रही है, वहाँ तुरन्त पानी का छिड़काव किया जाए, ताकि धूल उड़नी बन्द हो. अब जबकि पानी-ही-पानी सारी जमीन पर हो गया, तो राजकुमार खुश हुआ. खुशी के मारे मार्गों पर निरीक्षण करने पहुँचा, तो उसके सारे कपड़े धूल मिश्रित पानी के छींटों से गन्दे हो गए. अब क्या होना था ? आप सभी समझ गए होंगे कि उस नादान राजकुमार की असहनशीलता एवं अकड़ की पकड़ ने उसकी बुद्धिमत्ता को सुला दिया था. वह न तो धैर्य से, विवेक से समझने व सुनने को तैयार था, न ही उसके पिता को वह किसी बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह को सुनने देना चाहता था. अनेक प्रयासों के बावजूद जब गन्दगी नहीं हटी, मात्र रूप बदलती रही, तब उस परेशान राजा व राजकुमार को देखकर एक राह चलते वृद्ध सज्जन ने बिना माँगे ही जूते भेंट किए और राजकुमार को कहा कि वे जूते पहनकर चलें, इससे उनके पैरों में कोई फाँस नहीं चुभेगी. इतनी छोटी-सी वस्तु ने कितनी गम्भीर समस्या को क्षणमात्र में सुलझा लिया था. आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी इस कहानी को सुनाया करते थे और फिर कहा करते थे कि—

●●●